

Finance Minister to the shipping industry and the tea estates. The shipping industry, as we all know, as also the tea industry, are our very good foreign exchange earners and as such any concessions granted to them will be in the interests of the country itself and its finances.

I am indeed happy to know from the day before yesterday's newspaper that my State of U.P., during the next Five Year Plan, is to get fifteen new industrial units in the public sector.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA) : You should end with the happy note that fifteen industries are coming up.

PANDIT S. S. N. TANKHA : This is indeed good news for U.P. which had been utterly neglected in the matter of setting up of new industries during the last two plans and in the current Third Five Year Plan also. I do hope that the projected industries will be set up and will not be postponed. In this connection may I draw the attention of the Finance Minister that for the adequate development of a large State like U.P. which contains almost one-sixth of the population of India, it is absolutely necessary for it to have an adequate supply of electricity, but while the State has a surplus of power supply, it is still very short of transmission lines for which I funds from the Government of India are in urgent need. I hope the Finance Minister will give this matter his urgent and sympathetic consideration.

MESSAGE FROM THE LOK SABHA

THE APPROPRIATION BILL, 1966

SECRETARY : Sir, I have to report to the House the following message received from the Lok Sabha, signed by the Secretary of the Lok Sabha :

"In accordance with the provisions of Rule 96 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, I am directed to enclose herewith a copy of the Appropriation Bill, 1966, as passed by Lok Sabha at its sitting held on the 22nd March, 1966.

2. The Speaker has certified that this Bill is a Money Bill within the meaning of article 110 of the Constitution of India."

Sir, I lay the Bill on the Table.

THE BUDGET (GENERAL). 1966-67—GENERAL DISCUSSION— *continued*

श्री जगन्नाथ प्रसाद (राजस्थान) : उप-सभाध्यक्ष महोदय, मेरे पूर्व वक्ताओं ने बजट के सम्बन्ध में लगभग सभी मदों पर प्रकाश डाला है और स्वयं वित्त मंत्री महोदय ने देश के सामने जो विभिन्न समस्याएँ हैं उन पर प्रकाश डालते हुये अपने कर प्रस्तावों को रखा है। उन्होंने बजट का उद्देश्य देश में उत्पादन बढ़ाना, हमारे यहां के निर्यात को बढ़ाना और आयात को कम करना बताया है। इन्हीं मदों को ध्यान में रख कर मैं भी अपने कुछ सुझाव आपके सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूँगा। उन्होंने बजट प्रस्तुत करते समय अपने भाषण में कुछ और समस्याओं की ओर हमारा ध्यान दिलाया जैसे कि आर्थिक क्षेत्र में अपर्याप्त कार्य पूँजी, बाजार की सुस्ती, शोधन-सन्तुलन पर दबाव और अत्यावश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि। इसके साथ-साथ हमारी पैदावार पर जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है वह भी हमारे ध्यान में है। वित्त मंत्री जी ने इन सब बातों को ध्यान में रख कर देश के सामने एक बजट पेश किया जिसमें उन्होंने कुछ कमी की चर्चा की और पूँजी खाते में लगभग 112 करोड़ रुपये की वास्तविक कमी के कारण भी बताये और उन कारणों में उन्होंने पहला कारण बताया, विदेशी सहायता की कमी और दूसरा कारण बताया राज्यों को दी गई कुछ ऋण सहायता जो कि लगभग 100 करोड़ की हो जाती है।

श्रीमन्, ये सब बातें तो हमारे सामने बराबर आती हैं और इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर जितने भी वित्त मंत्री हैं उन्होंने यहां पर बजट पेश किये हैं और उन सिद्धान्तों के आधार पर कुछ कर लगाये हैं। इस बार भी

[श्री जगन्नाथ प्रसाद]

उन्होंने कुछ करों में कमी की है, कुछ में बढ़ोतरी की है और कुछ से उठा लिया है। इसलिये इसके पहले कि मैं आम बातों की चर्चा करूँ इन कर प्रस्तावों के बारे में भी कुछ कहना चाहूँगा।

सब से पहले, उन्होंने चीनी पर कुछ टैक्स बढ़ाया है और उन्होंने यह कहा है कि प्रति किलोग्राम लगभग 8 या 9 पैसे बढ़ेगा हालांकि उन्होंने इस बात को मंजूर किया है कि यह सारा का सारा बोझा गरीबों पर पड़ेगा, उपभोक्ताओं पर पड़ेगा। श्रीमन्, इस वृद्धा में मैं नहीं जाना चाहता, जब देश का विकास होता है, योजनायें बनती हैं और पूर्ण होती हैं तो निश्चित रूप से टैक्स लगता है, किन्तु, श्रीमन्, एक तरफ तो आप खाने में आदने परिवर्तित कर के काम चलाने की बात करते हैं और दूसरी तरफ हम देखते हैं कि कुछ हमारी ऐसी आदतें बनती जा रही हैं कि हम उन चीजों को खाना पसन्द करते हैं जिन चीजों की आपको आवश्यकता है, मिमाल के तौर पर मैं चीनी के बारे में कहना चाहता हूँ। मैं राजस्थान से आ रहा हूँ, मेरे यहां के लोग आज से 8 या 10 साल पहले चीनी नहीं खाते थे, कोई मेहमान आया, कोई त्योहार हुआ तो चीनी मंगा ली और वह भी बूरे के तौर पर लेकिन आज से लगभग 2, 3 साल पहले चीनी पर कंट्रोल हुआ तो चीनी के साथ गुड़ की कमी हो गई और हम लोग जो गुड़ खाते थे उनको गुड़ मिलना मुश्किल हो गया, चीनी के दाम से दुगुने दाम पर भी गुड़ मिलना मुश्किल हो गया, नतीजा यह निकला कि हमने चीनी खानी शुरू की क्योंकि चीनी कंट्रोल रेट से बिकती है, खाने में भी अच्छी है, देखने में भी अच्छी है और सस्ती भी मिलती है और गुड़ जिसको खाते हैं वह मिलता नहीं किसी कीमत पर। तो इस तरह से हमने आदत को बदला और आज देश के अन्दर चीनी की खपत काफी बढ़ गई, यहां तक बढ़ गयी कि गरीब से गरीब आदमी भी जो कि गुड़ खाकर कभी गुजारा करता था आज चीनी खाता है। देखने में यह छोटा आइटम है लेकिन एक इन्सान जिस इन्सान की आमदनी, अगर

आपको सही शब्दों में मालूम हो, तो छः आने चार आने, साढ़े तीन आने रोज होती है, उसको कभी चीनी की आवश्यकता पड़ जाये, खाने के लिये नहीं दवा-दारू के लिये भी, तो वह नहीं खरीद सकता है। इसलिये जो रोजमर्रा की खाने पीने की चीजें हैं उन चीजों पर टैक्स न लगता तो अच्छा होता। एक तरफ तो आप हमारे देश में चीनी बेचते हैं 1 रु० 55 पैसे किलोग्राम के भाव से लेकिन विदेशों में भेजते हैं 25 पैसे या 26 पैसे किलोग्राम के भाव से। यह ठीक है आपको जरूरत है एक्सपोर्ट करने की इसलिये कि आपको विदेशी मुद्रा लेनी है लेकिन अगर वह चीनी हमको खाने के लिये दे देते तो वह अनाज के भाव से सस्ती पड़ती। अनाज एक रुपये का एक सेर सवा सेर मिल जाता है, इससे ज्यादा नहीं मिलता, और चीनी मिल सकती थी। तो इस वास्ते श्रीमन्, ऐसी व्यवस्था कर दी जाये, चीनी की ऐसी चीजें बना दी जायें कि हम खा लिया करें।

इसके साथ ही मैं एक बात और अजें करना चाहता हूँ। कच्चे तम्बाकू पर जो शुल्क बढ़ाया है . . .

उपसभाध्यक्ष (श्री महावीर प्रसाद भार्गव):
तम्बाकू की बात खाने के बाद कीजिएगा।

The House stands adjourned till 2-30 p.m.

The House then adjourned for lunch at half-past one of the clock.

The House reassembled after lunch at half-past two of the clock, the VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR AM KHAN) in the Chair.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

INDISCIPLINE AMONG CERTAIN SECTIONS OF THE
STAFF OF THE INDIAN AIRLINES CORPORATION

SHRI I. K. GUJRAL (Delhi): Sir, with your permission I call the attention of the Minister of Transport, Aviation, Shipping and Tourism to the